SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

श्री मद् भागवत गीता में मानवतावाद

रामप्रसाद रजक
शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

प्राक्कथन

भारत आर्यावर्त आर्यों का देश है, प्राचीन काल में लोगों में इस प्रकार के मानवतावादी गुण इतने अधिक प्रगाढ थे,कि लोग पूरा जीवन परोपकार में लगा देते थे, किंतु आज मानव में इन मानवतावादी गुणों का ह्रास होता जा रहा है। तथा स्वार्थ वृत्ति हावी होती जा रही है। इसकी कोई आवश्यकताऐं इतनी भौतिक होती जा रही हैं, कि वह प्रकृति से बहुत दूर चला गया है,आज की सूखा -बाढ़ तथा मौसम की अनियमितता का कारण भी यही है, कि स्वार्थी मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति को नुकसान पहुंचाता जा रहा है। जिससे लगातार पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, मानव में संवेदनशीलता, ईमानदारी, सत्यवादिता, सद्भाव, परोपकार दयालुता, धर्म, समान व्यवहार आदि गुणों की कमी होती जा रही है।' वह पैसे कमाने के लिए किसी भी का गला काट सकता है, लोगों में अच्छी पुस्तक पढ़ना छोड़ दिया है, मोबाइल एवं मीडिया लगातार लोगों के सामने असली का परोस रहा है। इन सभी इन सभी कारणों से मानव स्वभाव बदल रहा है, उसमें मानवता लगातार समाप्त होती जा रही है, यदि यही क्रम चलता रहा तो मानव का पतन निश्चित है।

प्रस्तुत शोध पत्र 'श्रीमद् भागवत गीता में मानवतावाद' इस बात की खोज करेगा, कि हमारे पूर्वज मानवतावादी गुणो के कारण किस प्रकार सुखी थेउनकी आयु 100 वर्षों से अधिक हुआ करती थी, हमारे धार्मिक ग्रंथ जैसे श्रीमद् भागवत गीता में मानवतावादी गुण कहाँ तक पाये जाते हैं, उनकी क्या उपयोगिता है, इनकी क्या उपयोगिता है,इस प्रकार अध्ययन करके लोग इसका अध्ययन करके लोग मानवतावादी गुणो को अपना महत्व देने लगेंगे।

मानवतावाद भारत में जन्मी ऐसी पवित्र भावना है,जो मानव को केंद्र में रखकर उसकी हित में और उसकी भलाई के लिए सोचती है!किंतु एक मानव के हित में नहीं बल्कि, संपूर्ण

मानवता एवं जीव जगत के कल्याण के बारे में सोचती है, यह, 'वसुधैव कुटुंबकम' की धारणा पर आधारित है।

कुंजीशब्द

आर्यावर्त, संप्रदाय, मानवता, पुरस्कार, पवित्रता, सर्वोपरि।

शोधविधि

इस शोध पत्र लेखन में मैंने श्रीमद् भागवत गीता की पुस्तक से प्राप्त ज्ञान एवं मेरे स्व अनुभव का प्रयोग किया है। जिसमें मानवतावादी गुणों एवं आदर्शों को आधार बनाया गया है, तथा वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक विधियों का प्रयोग करते हुए विषय की गहराई तक पहुंचाने का प्रयास किया है, इसकी अतिरिक्त छोटे-छोटे सर्वेक्षण भेटवार्ता मौखिक प्रश्न तथा विश्लेषणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया है, इस शोधपत्र का अध्ययन करके लोग निश्चित ही मानवता की प्रेरणा लेंगे।

विषय विस्तार

इतिहास इस बात का साक्षी है, कि जब-जब दुनिया में कोई बुराई फैली है, तो इसका निदान भी अवश्य आया है, इस प्रकार आज फैले हुए अनाचार, अत्याचार व पापाचार-स्वार्थ को दूर करने के लिए मानव-सेवा को धर्म बनाने के लिए मानवतावाद का जन्म हुआ, प्राचीन काल में जब मनुष्य लोक परलोक को छोड़कर इस संसार को सर्वोपरि करने लगे, तब उसके अंदर परमब्रह्म परमेश्वर का भय दूर हो गया, और वह इस तरह के अमानवीय कृत्य करने लगा। औद्योगिक क्रांति की भीड़ भाड़ में मानव मानव खो गया तब 16वीं एवं 17वीं सदी में पुनर्जागरण काल आया, और शिक्षा दर्शन में नवीन क्रांतिकारी विचार का जन्म हुआ। जिसे मानवतावाद कहा गया। शिक्षाशास्त्री ब्रुबेकर महोदय ने अपनी धार्मिक पुस्तक 'मानवतावादी धार्मिक शिक्षा' में इसका वर्णन किया है जिसमें मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास हुआ जो मानव को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना मानते हैं तथा उसकी सेवा करना अपना धर्म मानते हैं।

मानवतावाद का अर्थ - मानवतावाद दो शब्दों से मानवता + वाद से मिलकर बना है, मानवतावाद का तात्पर्य ' मनुष्य की सेवा' भावना है। जबकि उसके पीछे 'ता' प्रत्यय लगाने से वह भाव से अधिक प्रगाढ हो जाता है, तथा वह कार्य की सब के प्रति भलाई के लिए हो जाता है, मानवतावाद अंग्रेजी में 'humanitarian' शब्द का हिंदी अनुवाद है, जिसका अर्थ मानव की शिक्षा के रूप में लिया जाता है, जो मनुष्य की सेवा का भाव छात्रों में उत्पन्न कर सके यह मानव की स्वतंत्रता तथा कल्याण पर बल देता है, मानव के प्रति किसी प्रकार का अन्याय नहीं होने पावे मानवतावाद 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना पर आधारित है, मानवतावादी दर्शन मानव को केंद्र में रखकर सारी सुविधाओं का मूल्यांकन करता है। तथा सत्य की खोज वैज्ञानिक ढंग से करता है, मानवीय उच्चतर मूल्यों को मानवतावाद कहा जाता है, अर्थात् स्वार्थ से ऊपर उठकर एक दूसरे के हित में काम करना ही मानवतावाद है।

मानवतावाद के सिद्धांत

- ईश्वर मनुष्य के लिए चिंतित रहते हैं।
- मानव का विकास स्वयं उसी पर निर्भर है।
- संसार में मानव सबसे शक्तिशाली और बुद्धिमान है।
- संसार की सेवा करने के लिए हमारा जन्म हुआ है।
- शांति प्रगति और जनतंत्र मानवतावाद के आधार हैं।
- शिक्षा व्यावहारिक और बाल केंद्रित होनी चाहिए।
- मानवतावाद करके सीखने पर बोल देता है।
- यह 'सत्यम शिवम सुंदरम'के भाव पर आधारित है।
- मनुष्य की मूल प्रवृत्तियां शाश्वत है किंतु वह भोजन निद्रा मिथुन जैसी पशु प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर मानवतावाद में जीता है।
- मानवतावाद मानव को सबसे सुंदर प्राणी मानता है।

इस संबंध में एक कविता है–

सुंदर है, विहंग सुमन सुंदर। मानव तुम सबसे सुंदर।

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

मानवतावाद एवं श्रीमद् भागवत गीता

श्रीमद् भागवत गीता विश्व का एक ऐसा दिव्य मूल्यवान और पवित्र मंगलदायक ग्रंथ है, जिसमें मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान मिलता है, भारतीय दर्शन में ब्रह्म जीव संसार के विचार विनिमय के लिए जो प्रयास किया गया है, इसे तत्व दर्शन कहते हैं, यह वास्तव में प्रस्थान कहलाता है प्रस्थान तीन माने गए हैं, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र एवं श्रीमद् भागवत गीता, इस प्रकार गीता प्रस्थानत्रई है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित यह प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथ भारत के भीष्म पर्व की अंतरीय विभाग 25 वें अध्याय से 42 वें अध्याय तक गीता पर्व में है। जिसमें भगवान श्री कृष्ण की वाणी द्वारा पार्थ अर्जुन को जो उपदेश दिए गए हैं, वे पूर्ण मानवतावादी हैं। गीता हिंदू धर्म के लिए वरदान है। ज्ञान की अथाह सागर है।

गीता में महाभारत के युद्ध का वर्णन है जब पांडवों का मुख्य योद्धा अर्जुन युद्ध के मैदान में अपने ही संबंधियों गुरु भाई और संबंधियों को शत्रु के रूप में पता है तो वह अपना गाण्डीव धनुष त्याग कर श्री कृष्ण की शरण में आ जाता है, और युद्ध नहीं करने के लिए कहता है। यद्यपि अधर्मियों को मारना श्रेष्ठ मानव धर्म है, फिर भी जब अर्जुन मानवतावाद का उल्लंघन करने के लिए तत्पर हो जाता है, तब भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं

"यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युद्धानम अधर्मस्य संभवामि युगे युगे॥

अर्थात् जब-जब धरती में अत्याचार पापाचार बढ़ते हैं तो मैं उसका विनाश करने के लिए अवतार लेता हूं, मानवतावाद की रक्षा करता हूं, फिर हे! अर्जुन तुझे कोई पाप नहीं लगेगा, क्योंकि तू मेरा कार्य कर रहा है।

"स्वे-स्वे कर्मणय भिरूथ: स: सिद्धि लभते नर:।

अर्थात् जो व्यक्ति अपने कर्म का संपादन कुशलता से करते हैं वे सभी मनुष्य सफलता व श्रेष्ठता प्राप्त करते हैं ।

"कर्मणये वाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।"

अर्थात् सब सब धर्मों को छोड़कर हे! अर्जुन तुम मेरे पास आ जाओ। मैं तुमको दुखों से मुक्त कर दूंगा, मानवतावादी धर्म का पालन सभी को करना चाहिए जैसा अर्जुन संलग्न हो जाता है, इसलिए मानव सेवा सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ गुण है, जैसा गीता में श्लोक कहता है, संसार में दो प्रकार की मनुष्य होते हैं क्षर और अक्षर सभी अक्षर नस होते हैं जबकि अक्षर अनाशवान होते हैं।

मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है, यह मानवता धर्म का पालन करने वाला मनुष्य ईश्वर कहलाता है। गीता में परा और अपर शक्तियों का वर्णन है, जो सिद्ध करती है, कि मानव मानवता धर्म का पालन करता है, वह पुरुषोत्तम है, जैसे भगवान श्री राम।

गीता में मानव विकास की तीन अवस्थाओं को माना गया है, जैविक, सामाजिक एवं मानवतावादी, अर्थात मनुष्य जन्म लेता है,तो वह जीव मात्र है। तथा समाज में रहकर बड़ा काम करता है, तो वह समाज व मानव दोनों के लिए काम करता है। गीता में प्रेयस मार्ग की पुनर रचना की गई है और शैक्षिक उपदेश के लिए रणभूमि का चयन किया गया है, जिसमें श्री कृष्ण अर्जुन को मानव पर हो रही अत्याचारों को मिटाने के लिए अर्जुन का सहारा लेते हैं।

मानवतावाद दो प्रकार की विद्याओं का ज्ञान जीवन के लिए आवश्यक मानता है, जिसे श्रीमद् भागवत गीता में परा-अपरा विद्या कहा गया है, इनको लौकिक और पारलौकिक ज्ञान भी कहते हैं। मानव तभी पूरा है जब वह ज्ञान की आंखों से देखता है, ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है जिससे वह मानवतावादी धर्म अपनाकर स्वयं अपना तथा सभी मानव जाति का कल्याण कर सके, तथा अंततः मोक्ष को प्राप्त कर सके।

गीता के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मानसिक स्वतंत्रता या लोकतांत्रिक भावना से है जैसे भगवान श्री कृष्ण उसे समझा कर कहते हैं कि गीता के अनुसार आचरण करो। पाठ्यक्रम में भी किसी ज्ञान को थोपा नहीं जाना चाहिए जैसे भगवान श्री कृष्ण कहते हैं।

'' 'ग्र' निगरणे गिरति गिलति अज्ञानम् इति''। अर्थात् गुरु वह है जो शिष्य के अज्ञान को निगल जाता है, 'गु' शब्द का अर्थ अंधकार जबकि 'रु' शब्द का अर्थ नाश करने वाला है इस प्रकार गुरु शिष्य के अज्ञान अंधकार का नाश करने वाला है।

इस प्रकार गीता संपूर्णता एक मानवतावादी ग्रंथ है जिसमें मानवतावाद की सभी सिद्धांत समाहित हैं जिसमें मानवतावाद को एक धर्म मानकर पालन करने की प्रेरणा दी गई है, साथ ही यह कामना की गई है, कि हर मनुष्य सक्षम हो, ईश्वर के संकट हो,तथा श्रेष्ठ गुणो वाला है।

शोध परिणाम

इस शोध पत्र में भारत के ही नहीं विश्व की पवित्र ग्रंथ श्रीमद् भागवत गीता में मानवतावाद का परीक्षण एवं वर्णन किया गया है, जिसके अध्ययन से लोगों में मानवतावादी भारतीय धर्म का प्रचार प्रसार करगे तथा विश्व के उपदेशक भगवान श्री कृष्ण के उपदेशों का अनुकरण करेंगे। व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर व्यक्ति समाज देश एवं मानवता की सेवा करेंगे समाज संस्कृति एवं मानवता का विकास सर्वोपरि है, अर्थात् मानवता की सेवा करना प्रत्येक सुखी प्राणी का दायित्व है, दुखों को दूर करना शिक्षा एवं ज्ञान को जीवन में धारण करना तथा सर्वोपरि समझना, सभी के साथ समानता का व्यवहार करना आदि विचार को श्रेष्ठ विचार मानकर उनका अनुकरण करेंगे तथा अपने आचरण में उतरेंगे जिससे श्रेष्ठ समाज और मजबूत देश का निर्माण होगा या इन शब्दों में कहे कि भारत में पुनः रामराज लाने की ओर अग्रसर होगा ।

निष्कर्ष

मानवतावाद एक श्रेष्ठ भाव है, जो केवल एक व्यक्ति का हीं नहीं, अपितु संपूर्ण जगत का कल्याण एवं उसकी उन्नति करने एवं इस बरकरार रखने की शक्ति रखता है यह सभी प्राणियों में आवश्यक होना चाहिए, क्योंकि मनुष्य परमात्मा का लाडला पुत्र है, इस ईश्वर ने अपार शक्ति एवं सामर्थ्य दिया है, अपने लिए तो पशु भी जीता है, जिन वही उत्तम है जो मानवता के लिए, श्रीमद् भागवत गीता विश्व साहित्य का एक अपूर्व एवं विशेष ग्रंथ है श्रीमद् भागवत गीता के अनुसार मनुष्य को अपनी इंद्रियों मन एवं बुद्धि पर कठोर नियंत्रण रखना चाहिए ताकि वह दुनियादारी से मुक्त रहकर जीवन में परम लक्ष्य मानव सेवा व ईश्वर प्राप्ति की तरफ अपने कदम बढ़ा सके। स्वाधीन होकर लगातार अपने कर्मों में लगा रहे विषयों को भोगते हुए भी उनमें लिपायमान न हो। गीता वास्तव में सर्वकालिक एवं सर्वदेशिक ग्रंथ है। जो बताता है कि जब भी

समाज में विकृति उत्पन्न होती है, तब तब समाज को संगठित करने वाली मानवतावाद जैसी विचार शक्ति श्री कृष्ण के रूप में जन्म लेते हैं, तथा अत्याचारों से मुक्ति दिलाकर मानवतावाद की स्थापना करते हैं जिससे समाज में सुव्यवस्था बनी रहती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय डॉ. रामशकल 2014 ''भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयाम'' भाग-2
2. पाण्डेय डॉ. रामशकल 2012 ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक''
3. शर्मा मणि-2012 ''समकालीन भारतीय शिक्षा दर्शन ''राखी प्रकाशन आगरा''
4. वेदव्यास महर्षि ''श्रीमद्भगवत गीता'' अध्याय 18 गीता प्रेस गोरखपुर
5. शर्मा डॉ. आर. ए. 2014 ''तत्व मीमांसा मूल्य मीमांसा एवं शिक्षा'' राज प्रिंटर्स मेरठ

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार